राज्य अध्याय 31

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **नीतिवचन 15,16,17 और 19**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 15,16,17 और 19) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख पद)*** **(11) रोमियों 8:1**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***
(11) रोमियों 8:1। इसलिये अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **वैद्य व बीमार और पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति**

मत्ती 9:9-13 में "वैद्य व बीमार" और मत्ती 5:13-16 में "पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति" का दृष्टांत परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में हैं।

"एक दृष्टांत" स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सच्ची जीवन कहानी या चित्रण है जिसे आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की आवश्यकता के साथ सामना कराने के लिए सामन्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे

क. वैद्य और बीमार का दृष्टांत

पढ़ें मत्ती 9:9-13, मरकुस 2:13-17 और लूका 5:27-32।

1. <u>दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।</u>

परिचय। दृष्टांत की कहानी अंलकारिक भाषा में बातई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित

है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांसकृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

यह दृष्टांत एक बयान के रूप में है। वैद्य ऐसे लोगों को चंगा करने के लिए उनसे मिलते हैं जो बीमार हों। स्वस्थ लोग आम तौर पर वैद्य के पास नहीं जाते।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत के बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 9:9–11 में पाया जाता है।

मत्ती या लेवी नाम का एक महसूल लेने वाला, कफरनहूम में समुद्र के किनारे महसूल की चौकी पर बैठा करता था (मरकुस 2:13)। और उसका काम उन सभी चीजों पर कर लेना था जो उस अंतर्राष्ट्रीय मार्ग से ले जायी जाती थी, जो सीरिया और मिस्त्र के बीच था। वह कफरनहूम में रहता था, यह वही स्थान था जिसे यीशु ने अपना मुख्यालय चुना था (मत्ती 4:12–16)। इस वर्तमान घटना से पहले ही, वह नियमितरूप से यीशु के संपर्क में रहा होगा और उसने पहले ही यीशु को अपना हृदय समर्पित कर दिया था। जब यीशु ने उसे एक चेले के रूप में अपना अनुसरण करने के लिए बुलाया, वह अपने व्यवसायिक भूतकाल को स्पष्ट रूप से छोड़ कर यीशु के बारह प्रेरितों में से एक बन गया।

लूका इस बात को दर्ज करता है कि मत्ती ने अपने घर पर यीशु के लिए एक बड़ा भोज दिया। महसूल लेनवालों और पापियों की एक बड़ी भीड़ यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन करने के लिए आयी। महसूल लेने वालों ने उन नियम और कानूनों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जो फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने परमेश्वर की व्यवस्था में अध्यारोपित कर दिये थे। इसके अलावा महसूल लेने वालों और उनके मित्रों ने परमेश्वर की व्यवस्था की अवहेलना की यहाँ तक कि उसका घोर उल्लंघन किया। इसके अतिरिक्त वे बेईमान, लालची और इस्त्राएल के प्रति देशद्रोही के रूप में बदनाम थे। यहूदी उन्हें धोखेबाज और विशेषरूप से फरीसी उन्हें तुच्छ जानते थे।

फरीसियों ने यीशु और उनके चलों को इन महसूल लेने वालों और पापियों के साथ भोजन करते देखा। संभावित रूप से जब भोज समाप्त हुआ और सब लोग जा रहे थे, तब उन्होंने यीशु के चलों के सामने उनकी आलोचना की। उन्होंने चेलों पर अपनी कड़वाहड को उगला जिन्होने, ऐसे व्यक्ति को अपना शिक्षक होने के लिए चुना। यीशु ने फरीसियों द्वारा की गई आलोचना को सुना और इसके परिणामस्वरूप चेलों की शर्मिंदगी को महसूस किया। इसलिए यीशु ने उन्हें वैद्य और बीमार का दृष्टांत बताया।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 9:12 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण लूका 9:13 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए

नहीं किया था। दृष्टांत रूपक कथा नहीं है! प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक महत्व नहीं देना चाहिए।

सिखाएँ। यीशु किसी भी विवरण की व्याख्या नहीं करते। हालाँकि, कथन के रूप में इस दृष्टांत से यह स्पष्ट होता है कि *स्वस्थ, बीमार* और *वैद्य* प्रासंगिक विवरण है। आज तौर पर स्वस्थ नहीं परन्तु बीमार लोग वैद्य के पास चंगे होने की आशा से जाते हैं। ''स्वस्थ लोग'' फरीसियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, ''बीमार लोग'' महसूल लेने वाले और पापियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और ''वैद्य'' यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांत को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांत की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। *एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है।* इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें. इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 9:9–13 में बीमार और वैद्य का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में गवाही'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''ऐसे समय और अवसर होते हैं जब तुच्छ लोगों के साथ संगति करना पूर्ण रूप से न्यायसंगत और उचित होता है, विशेषरूप से जब उद्देश्य उनकी जरूरतों को पूरा करना हो।''

गवाही देना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग, लोगों तक चंगाई और उद्धार लाने के लिए, बाहर जाकर संसार में सभी प्रकार के लोगों–समूहों से मिलते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की उनकी समाजिक पृष्ठभूमि, समाजिक प्रतिष्ठा या विकास क्या है।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजे और चर्चा करें। बाइबल के ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

व्यवस्थाविवरण 10:17–18; मत्ती 5:6. यीशु सिखाते हैं कि मसीहियों को धर्मिकता के लिए भूखे और प्यासे होना चाहिए। अर्थात उन्हें उन कमजोरों और ऐसे लोगों के लिए समाने आना चाहिए जिनकी समाझ में कोई आवाज नहीं: अनाथ, विधवाएँ, प्रवासी, जो आर्थिक प्रवासी हो सकते हैं, राजनीतिक शरणार्थी या धार्मिक शरणार्थी जो अक्सर अवैध प्रवासी होते हैं।

मत्ती 11:28–30. अपने आप को उन लोगों के लिए दें जो चिंताओं, बोझ, समस्याओं और डर से दबे हुए हैं। बहुत से लोगों को किसी ऐसे व्यक्ति का जरूरत है जो उनकी सुनने के लिए इच्छुक हो, उन्हें गम्भीरता से ले

और उन्हें स्वीकार करे। बहुत से लोग अकेले है और उन्हें जरूरत है कि कोई आए और उनसे मेल करे।

मत्ती 22:9–10. अपनी गली में रहने वाले और सड़क के किनारे घूमने वाले लोगों के पास जाएं। कई युवा लोग ऊब चुके हैं और उनके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है। जिन्हें आप ढूढ़ सकते हैं उन सभी को यीशु मसीह और परमेश्वर के राज्य में आमंत्रित करें, चाहे वे दूसरे लोगों की दृष्टि में ''अच्छे'' हों या ''बुरे'' हों।

लूका 14:21–23. अपने नगर की सड़कों में जाओ और गरीबों, लंगड़ों और अपंगों को लाओ। अक्सर समाज के निचले या किनारे के लोग यीशु मसीह के निमत्रंण का जवाब देने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं।

लूका 15:4,8,24. खोई हुई भेड़ का पीछा करें जब तक आप उसे पा नहीं लेते। वे पूर्व विश्वासियों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जो भटक गए हैं। लोगों को उनके पापों और दुष्ट जीवन–शैली से पश्चयाताप करने और परमेश्वर और उनके लोगों की ओर मुड़ने के लिए ले आओ।

लूका 19:10. जाओ और उन लोगों को ढूढ़ों और उद्धार कराओ जो वचन के हर अर्थ में खो गए हैं।

यूहन्ना 7:37–38. उन लोगों को आमंत्रित करों जो परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के लिए प्यासे हैं, परमेश्वर की वास्तविकता के लिए कि परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के द्वारा उन में रहता है और ऐसे व्यक्ति होने के नाते जिससे जीवन के जल की धाराएँ बहती है जो परिर्वतर को लाती हैं।

---

6. दृष्टांत के मुख्य उपदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

चर्चा करें। मध्यस्थता करने वाले मित्र के इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमे क्या जानना या विश्वास करना और क्या होना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) यीशु और उनके चेलों की संगति तुच्छ लोगों के साथ थी।

यीशु तुच्छ लोगों के साथ मिलते, संगति करते थे, एक पियक्कड़, पेटू और बुराई में साझेदार व्यक्ति के समान नहीं, बल्कि एक वैद्य के समान। किसी भी तरह अपने मरिजों के पापों (बीमारियों) से दूषित हुए बिना, उन्हें चंगा करने के लिए यीशु को उनके बहुत निकट जाना था! एक सच्चे वैद्य के समान यीशु ने अपने काम को किया।

(2) फरीसियों ने तुच्छ लोगों का नज़रअनदाज किया।

वे स्वयं की कल्पना में परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी थे। वे स्वयं को ''स्वस्थ'' और ''बीमारों'' (अन्य सभी लोगों) को तुच्छ जानते थे (लूका18:9; यूहन्ना 7:49)। क्योंकि वे महसूल लेने वालों और पापियों के संपर्क में आने को उनकी धार्मिक शुद्धता का ''दूषित होना'' मानते थे, इसलिए वे उनसे परहेज करते थे।

उनके स्वयं के तर्क के आधार पर यीशु ने फरीसियों की निंदा की और स्वयं के आचरण को सही ठहराया। यदि फरीसी महसूल लेने वालों और पापियों को ''बीमार'' मानते थे तो फिर उन्होंने उन्हें चंगा क्यों नहीं किया? यीशु ने फरीसियों द्वारा की गई आलोचना का उत्तर उनकी ओर इशारा करते हुए इस बात से दिया कि वे अपने कर्तव्य को अनदेखा कर रहे थे। वे इन तिरस्कृत लोगों की प्रति कोई सहायता और दया नहीं दिखा रहे थे।

(3) परमेश्वर तुच्छ लोगों प्रति दया की इच्छा रखते हैं।

यीशु ने फरीसियों को चुनौति दी कि वे जा कर परमेश्वर के वचन के अर्थ को सीखें, ''मैं बलिदान नहीं, परन्तु दया चाहता हूँ।'' यीशु ने होशे 6:6 पद को बोला। होशे के समय में इस्त्राएल (754–714 ई.पू) परमेश्वर के

प्रति विश्वासयोग्य नहीं था, परमेश्वर की वाचा को तोड़ा था, परमेश्वर की वाचा के विरूद्ध बलवा किया था, भलाई को त्याग दिया था, बिना परमेश्वर की अनुमति के कामों को किया और अपने स्वयं के विनाश के लिए मूर्तियाँ बनायी (होशे 8:1-4)। इस्त्राएल में लोगों ने लूटा और हत्या की, व्याभिचार किया और धोखा दिया (होशे 6:9-7:2)। इस तरह की दशा मे लगातार बलिदानों को जारी रखना मृत कर्मकांड़ों के तहत था और परमेश्वर की दृष्टि में घृणास्पद था (होशे 8:13)। भविष्यद्वक्ता होशे ने कहा कि परमेश्वर दया चाहता है, अर्थात, परमेश्वर की वाचा को थामे रखना और पड़ोसी के प्रति प्रेम रखना। यहाँ मत्ती 9:13 में, महसूल लेने वालों और पापियों के प्रति दया और कृपा पर जोर दिया गया है।

(4) यीशु धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को पश्यताप करने के लिए बुलने आये।

लूका 5:32 में *मन फिराने* के लिए *बुलाना* शब्द मत्ती और मरकुस में *बुलाने* शब्द में निहित हैं। पापियों को बुलाया (आमंत्रित किया) गया है कि वे यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करें। अब तक यह बुलाहट सुसमाचार प्रचार करने के लिए सामने रखी गयी है, जो हमेशा प्रभावशाली नहीं होती (मत्ती 22:14), लेकिन वास्तव में बुलाहट लोगों के हृदयों में पवित्र आत्मा का काम है, जो हमेशा प्रभावशाली होता है (रोमियों 8:30)!

यह लेखांश इसे स्पष्ट करता है कि उद्धार का निमत्रंण उन लोगों तक नहीं पहुँचाया गया है जो स्वयं को धर्मी समझते थे, चाहे वे थे भी नहीं। उद्धार का निमत्रंण उन लोगों तक पहुँचाया गया है जो उद्धार की आवश्यकता के लिए व्याकुल थे! यीशु मसीह पापियों, भटके हुओं, भिखारियों, भोझ से दबे हुओ और भूखे और प्यासों को ढूढ़ने और बचाने आए, संक्षेप में खोए हुओ को!

ख. पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति का दृष्टांत

पढ़ें मत्ती 5:13-16।

ये दो तुलनाएँ वास्तव में ''रूपक'' हैं। एक रूपक दो चीजों के बीच एक तुलन है जो सामान्यरूप से एक दूसरे से अलग होते है और अंतर गर्भित होता है। इसमें ''जैस'' और ''समान'' शब्द का प्रयोग नही किया और इसलिए किसी को तुलना का बिंदू सामग्री या संदर्भ से खोजना चाहिए। उदाहरण के लिए, बाइबल में निम्नलिखित उदाहरण दिए गए हैंः ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' (भजन 23:1)। ''सत्य का कमरबंद, ...धार्मिकता की झिलम,... विश्वास की ढ़ाल, ... आत्मा की तलवार, ...'' (इफिसियों 6:10-17)। ''कुत्तों से सवधान रहना'' (फिलिप्पियों 3:2)।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

नमक। नमक की कई विशेषताएँ हैंः इसकी सफेदी, खारापन, स्वाद और संरक्षक शक्ति। इस कहानी चित्रण में सम्भावित रूप से जोर इसकी रोगाणु रोधक और संरक्षण शक्ति पर दिया गया है। नमक एक ऐसा पदार्थ है जो सड़ने से रोकता या बचता है। लेकिन स्वाद प्रदान करने का इसका काम बाहन नहीं निकाला जाना चाहिए (लैव्यव्यवस्था 2:13; कुलुस्सियों 4:6)।

नमक जिसने अपना स्वाद खो दिया। नमक जो मृत सागर के आस-पास कि दलदल, समुद्रतल और चट्टानों से प्राप्त होता है, व वह आसानी से बासी या क्षारीय स्वाद ला सकता है, क्योंकि वह खरिया मिट्टी के साथ मिल जाता है (यहेजकेल 47:11)। ऐसा नमक जिसने अपना गुण खो दिया, शब्दिकरूप से किसी काम का नहीं।

लोग उसे बाहर फेंक देते हैं और वह पैरों के नीचे रौंदा जाता है।

ज्योति। ज्योति में भी कई विशेषताएँ पायी जाती हैः इसकी चमक, दृश्यता, रंग और प्रकट शक्ति। इस कहानी चित्रण में इसकी दृश्यता पर जोर दिया गया है। ज्योति ऐसी चीज है जो अच्छी चीजों को प्रगट करती और अन्धेरे को दूर करती है।

पहाड़ पर बसे नगर की ज्योति। पहाड़ पर बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता। वह सब को स्पष्ट दिखाई देता है।

दीवट पर दीपक की रौशनी। यीशु मसीह के समय में दीपक को टेरा कौटा के सपाट पात्र में रखा जाता था, जो नोक के आकार के होते थे और उनमें दीपक की बत्ती के लिए एक छोद होता था। इसके ऊपरी भाग में दो छोद होते थे, एक तेल डालने के लिए और दूसरा हवा (ऑक्सीजन) के लिए। दीपक को एक कमरे के घर के बीच में मौजूद खंम्भे पर बने दीवट पर रखा जाता था। यह खम्भा मुख्य आड़े शहतीर को थामे रखता था जिस पर छत टिकी रहती थी। या फिर दीपक को दीवर में बने छेद या किसी चीज पर रखा जाता था। मुद्दा यह है कि इसे ऐसी स्थिति में रखा जाता था जहाँ यह कमरे में सब को रौशनी दे सके।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत का समायोजन मत्ती 5:11-12 में निहित है।

यीशु मसीह ने मसीहियों पर संसार के प्रभाव का वर्णन कियाः इस संसार के बुरे लोग अक्सर मसीहियों को सताते और अपमानित करते हैं। अब पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति के दृष्टांत में, यीशु बिल्कुल इसके विपरीत वर्णन कर रहे हैं, अर्थात, संसार पर मसीहियों का प्रभाव! इस संसार पर परमेश्वर के राज्य का प्रभाव नमक और ज्योति के प्रभाव के समना है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 5:13-15 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण इसके उदाहरणों में ही मत्ती 5:16 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। दृष्टांत में कौन से विवरण प्रासंगिक या आवश्यक है।

ध्यान दें।

नमक। यीशु ने स्वयं तुलना की कि परमेश्वर के राज्य के लोग नमक के समान है। नमक स्वाद देता है, लेकिन विशेषरूप से नमक सड़ने या खरब होने से बचाता है। इसलिए यह विवरण प्रांसगिक है।

ज्योति। यीशु ने यह तुलना भी की कि परमेश्वर के राज्य के लोग ज्योति के समान है। पहाड़ पर बसे हुए नगर की ज्योति और दीवट पर रखे दीपक की रौशनी किसी से छिप नहीं सकती। इसलिए यह विवरण भी महत्वपूर्ण है।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्स संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 5:14–16 में पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में गवाही देने'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''परमेश्वर के राज्य के लोगों का प्रभाव नैतिक और आत्मिक सड़न (नकारात्मकता) से लड़ना और उद्धार के संदेश (सकारात्मकता) को उसकी सभी आशीषों के साथ फैलाना है।''

गवाही देना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग एक ओर जहाँ सांसारिक–प्रवृत्ति या धर्मनिपेक्षीकरण को रोकते है वहीं दूसरी ओर वे संसार में उदासीनता या अलगाववाद से दूर रहते हैं। वे इस संसार के कई लोगों का सामना करते हैं जो परमेश्वर के अस्तित्व में होने पर विश्वास नहीं करते और जो इस संसार में केवल अपने मजे और भौतिकवाद में शामिल होते हैं (1कुरिन्थियों 15:32)। साथ ही उन्हें कई ऐसे लोगों का सामना करना पड़ता है जो सृष्टि के महत्व को नहीं समझते और जो केवल ऐसे धर्म में शामिल होते हैं जिसका इस संसार पर कोई प्रभाव नहीं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

खोजे और चर्चा करें। बाइबल के ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

इफिसियों 4:29; कुलुस्सियों 4:6; 1तीमुथियुस 4:12। नमक में संरक्षण शक्ति होती है और यह सड़ाहड को रोकता है। मसीहियों को अपने स्वभाव और भाषा में स्वादहीन नहीं होना चाहिए। नमक में खारापन और स्वाद भी होता है। मसीहियों के भाषण में अच्छी सामग्री होनी चाहिए और वह विचारों को प्रोत्साहित करने वाले होने चाहिए। इसे प्रतीरोध नहीं करना चाहिए, बल्कि आकर्षित करना चाहिए और आत्मिक आकर्षण होना चाहिए। इस प्रकार एक मसीही अपने भाषण और साथ ही साथ अपने आचरण से भी पहचाना जाना चाहिए।

भजन. 36:9; 119:105; मत्ती 6:22–23; 2कुरिन्थियों 4:6। ज्योति परमेश्वर के सच्चे ज्ञान को इंगित करती है। इसका स्त्रोंत परमेंश्वर में है, जो बाइबल और यीशु मसीह के माध्यम के प्रगट होता है। यह शारीरिक आँखों द्वारा आत्मा में प्राप्त किया जाता है। जिस पर हम अपनी आँखो को लगाते हैं वही निर्धारित करता है कि हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व कैसा होगा।

यूहन्ना 3:19–21; इफिसियों 5:8–14। ज्योति भलाई, धार्मिकता और सत्यता का प्रतीक है। यह हर उस चीज का प्रतीक है जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है। यह अंधकार के गुप्त और शर्मनाक कामों को उजागर करती है। मसीही लोग संसार के लोगों के सामने पारदर्शी जीवन जीते हैं।

यशायाह 9:1–7; यूहन्ना 1:4; 8:12। परमेश्वर के चरित्रगुणों को ''जीवन'' शब्द में संक्षेपित किया गया है और परमेश्वर के चरित्रगुणों के प्रकाशन को ''ज्योति'' शब्द में संक्षेपित किया गया है। यीशु मसीह जीवन और ज्योति है। वह परमेश्वर हैं और परमेश्वर के गुणों और परमेश्वर के धार्मिक राज्य को लोगों पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करते हैं। उनके राज्य का परिणाम आनंद और शांति होता है। जो कोई यीशु का अनुसरण करता है उस में जीवन की ज्योति होगी, अर्थात, वह अंनत जीवन का अधिकारी होगा और परमेश्वर के गुणों का प्रत्यक्ष प्रकाशन होगा।

भजन 27:1; लूका 1:77–79। व्यापक रूप से ''ज्योति'' में उद्धार की सभी आशीषें शामिल हैं। संभावित रूप से यह मत्ती 5:14 का अर्थ है। मसीही उद्धार की आशीष को संसार के लोगों पर प्रगट करते हैं। वे इस तथ्य को बिखेरते हैं कि वे पूर्णरूप से क्षमा किए गए, परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए गए और परमेश्वर की दृष्टि

में अनमोल हैं। वे अपने उद्धार के प्रति निश्चित हैं और मसीह में अपनी अनंत स्थिति के बारे में और इस संसार में आपने कार्य (सेवकाई) के मूल्य के बारे में आश्वस्त हैं।

---

6. दृष्टांत के मुख्य उपदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

चर्चा करें। मध्यस्थता करने वाले मित्र के इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमे क्या *जानना* या *विश्वास* करना और क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर के राज्य में लोग नमक हैं।

परमेश्वर के राज्य के लोग, अर्थात, वास्तविक मसीही, नैतिक और आत्मिक सड़न का मुकाबला करते हैं। नमक गुप्त रूप से कार्य करता है। हालाँकि हम जानते हैं कि यह सड़हट के साथ मुकाबला करता है, फिर भी हम इसे इसका कार्य करते हुए नहीं देख सकते। मसीहियों की, गैर-मसीहियों के बीच उपस्थिति अक्सर उन्हें व्यर्थ चुटकुले, अपवित्रता बोलने, दुष्ट योजनाएँ बनाने, घूस लेने, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, अपराध, नशा और गालियाँ देना इत्यादि से रोकती है। संसार बुरा है, लेकिन केवल परमेश्वर ही जानते हैं कि बिना अवरोध के यह और कितना भ्रष्ट हो जाएगा, उदाहरण, मसीहियों की प्रार्थनाएँ और जीवन (उत्पत्ति 18:20-32)।

(2) राज्य में मसीहियों के उन वंशजों के साथ क्या होता है जो अपने खारेपन को खो देते हैं?

फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक पुराने नियम के भाविष्याद्वक्ताओं द्वारा घोषित किए गए सच्चे धर्म के स्थान पर एक औपचारिक व्यवस्थावादी धर्म की पैरवी कर रहे थे। जिसका परिणाम यह हुआ की इस्त्राएल के धार्मिक जीवन में नमक ने अपना स्वाद खो दिया और बहुत से ''राज्य की संतानों'' को, अर्थात, पुराने नियम के विश्वासियों के अविश्वासी वंशजों को, परमेश्वर के राज्य से बाहर कर दिया गया (मत्ती 8:12)। उनका नया जन्म नहीं हुआ (यूहन्ना 3:3-8)।

इसी प्रकार, वे लोग जो सत्य की पहचान में तैयार किए गए थे (कलीसिया में, आध्यात्मिक विद्यालयों और बाइबल स्कूलों इत्यादि में। बिना नया जन्म् पाए), उन्होंने अपने आप को पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन के प्रति सख्त कर लिया और कठोर हो गए, उन्हें पश्चयाताप् के लिए नवीनीकृत नहीं किया जा सकता (मत्ती 12:32; इब्रानियों 6:4-6)[1]

(3) परमेश्वर के राज्य में लोग ज्योति और दीपक हैं।

परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को न केवल ज्योति से सुज्जित किया गया है, अर्थात, उद्धार की सभी आशीषों के साथ, बल्कि दीपक से भी, जो अपनी उद्धार की आशीषों को अपने चारों ओर मौजूद संसार के लोगों तक पहुँचाते हैं। एक घर के लिए जो कुछ एक दीपक होता है, वही सच्चे मसीही संसार के लिए हैं। वे मसीह के उद्धार और इसकी सभी आशीषों की रौशनी संसार में चमकाते हैं, ताकि सभी लोग इसे देख पाएँ और परमेश्वर की महिमा करना शुरू करें। मसीही, विश्वास के द्वारा अनुग्रह से प्राप्त किए गए अपने उद्धार के प्रति कृतज्ञता के कारण भले काम करते हैं।

---

[1] **इब्रानियों 6:4-6।** यूनानीः एडुनाटन .... पैरासेपोंटस (अनिर्दिष्ट, सक्रिय, कृदन्त) पैलिन एनाकेनाइजिन ईस मेटानोअन (फिर से पश्चयाताप करने लिए पुर्नस्थापित करना असम्भव) उन्होंने पहले पश्चयाताप किया था क्योंकि वे ''प्रबुद्ध'' (बपतिस्मा पाए हुए) थे, उन्होंने ''स्वर्गीय आशीष (प्रभु भोज) को चखा (होशहवास में आशीषों का आनंद लिया)'', ''पवित्र आत्मा में सहभागी हुए'' (निश्चित रूप से पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ जब प्रेरितों के हाथ उन पर रखे गए) (तुलना करें। शमौन से प्रेरितों के काम 8:18-21 में।), परमेश्वर के वचन की भलाई को चखा (प्रचार और शिक्षा) और आने वाले युग की सामर्थ्य को देखा(प्रेरिताई के युग में सामर्थ्य के काम या चमत्कार)।

मसीहियों को ज्योति–देनेवाले और ज्योति का प्रसार करने वाले होना है (फिलिप्पियों 2:15)! हालाँकि मसीही कभी भी ज्योति में स्वयं से नहीं होते। मसीह जगत की वास्तविक ज्योति है (यूहन्ना 8:12) और मसीही जगत की ज्योति केवल तब होते हैं, जब वे मसीह में बने रहते हैं और मसीह की ज्योति को प्रतिबिंबित करते हैं। मसीह सूर्य के समान है और समीही चन्द्रमा को दर्शाते हैं जो सूर्य की रौशनी से चमक रहा है। समीह से अलग होकर मसीही चमक नहीं सकते (यूहन्ना 15:5)।

इसलिए यह कलीसिया का काम नहीं है कि आपनी स्वयं की रौशनी फैलाए, आर्थत संसार के हर एक मुद्दे की घोषणा करें। उसका कार्य यीशु मसीह की ज्योति को फैलाना (प्रतिबिंबित) है, अर्थात यीशु मसीह के राज्य (राजा) और उद्धार की घोषणा करना। याद रखें ''यीशु की गवाही (यीशु और उनकी शिक्षाओं के विषय में यीशु द्वारा दी गई) भविष्यद्वाणी की आत्मा है'' (प्रकाशितवाक्य 19:10)!

ग. पमेश्वर के राज्य में गवाही के विषय में दृष्टांतों की मुख्य शिक्षाओं या पाठ का सारांश।

परमेश्वर के राज्य में गवाही के बारे में दृष्टांत निम्नलिखित्त हैं।

- मत्ती 9:9–13 में "बीमार और वैद्य का दृष्टांत"।
- मत्ती 5:13–16 में "पृथ्वी के नमक व जगत की ज्योति का दृष्टांत"।
- मत्ती 13:51–52 में "गृहस्थ का दृष्टांत" (देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 10)।
- मत्ती 9:35–38 में "कटाई व मज़दूरों का दृष्टांत" (देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 10)।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में इन दृष्टांतो का मुख्य शिक्षाएँ या पाठ क्या है? यीशु ने हमे क्या जानना या विश्वास करना और क्या बनना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को, विशेष रूप से खोए हुए लोगों को, पता होना चाहिए कि परमेश्वर या मसीह कैसे हैं।

यीशु मसीह खोए हुओं को ढूंढने और बचाने आए थे! अर्थात, बीमारों, पापियों, भिखारियों, बोझ से दबे हुओं, भूखों और प्यासों को। वे संसार के तिरस्कृति, वंचित और सताए हुए लोगों से मिलते थे उनकी चंगाई और विशेषरूप से उद्धार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए।

(2) मसीहियों को यह पता होना चाहिए कि उन्हें किससे समान होना चाहिए।

परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही गवाह बनें। ये दृष्टांत सिखाते हैं कि हमें यीशु के समान होना चाहिए, संसार के तिरस्कृति, वंचित और सताए हुए लोगों की चंगाई और उद्धार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उनसे मिलने वाले। मसीहियों को समाज से नहीं हटना चाहिए, बल्कि अपने चारों ओर के लोगों को प्रभावित करना चाहिए, नौतिकता और आत्मिकता में सड़ाहट (भ्रष्टता) के प्रति नकारात्मक रूप से तथा अपने ज्ञान और सुसमाचार की आशीषों को बाँट कर सकारात्मक रूप से। मसीहियों की यह जिम्मेदारी है कि जो कुछ भी उन्होंने बाइबल और विशेषरूप से यीशु मसीह से सीखा है उसे दूसरे लोगों तक भी पहुँचाए। मसीहियों को प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर संसार में अपने खेतों को काटने के लिए अधिक और योग्य मजदूरों को भेजे। और अंत में मसीहियों को योग्य मजदूर बनने के लिए अन्य मसीहियों को प्रशिक्षित करना चाहिए।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. <u>समर्पण</u>। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बीमार व वैद्य" और "पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति" के दृष्टांत का <u>प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें</u>।
3. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय</u>। प्रतिदिन **नीतिवचन 27,28,29 और 31** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. <u>स्मरण करना</u>। **(12) रोमियों 8:38-39** ।पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. <u>बाइबल अध्ययन</u>। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 8:18-39।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी <u>नोटबुक का अद्यतनीकरण करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।